ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

विश्व फलक पर नारी : एक संक्षिप्त विवरण

Women on the World Plane: A Brief Description

Paper Submission: 16/09/2020, Date of Acceptance: 29/09/2020, Date of Publication: 30/09/2020

रश्मि रंजन सिन्हा
पूर्व शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
भूपेंद्र नारायण मंडल
विश्वविद्यालय, लालू नगर,
मधेपुरा बिहार, भारत

सारांश

नारी की स्थिति में सुधार तो जरूर हुआ है लेकिन अभी भी संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। बाहर जहां नारी को अपने बॉस के रूप में कर्मचारी, 'पुरुष – बॉस' की तुलना में जल्द एक्सेप्ट कर एडजस्ट नहीं कर पाते हैं, वहीं बाहरी दुनिया में नारी कितने भी बड़े पद पर आसीन क्यों ना हो, लेकिन अधिकांश पुरुषों की वही नारी घर में पत्नी और उनके बच्चों की मां ही होती है, साथ – ही – साथ पत्नी से अन्य संबंधों की परिपूर्णता भी चाहिए। यहां रमणिका गुप्ता का मंतव्य सार्थक है– पुरुष के मुकाबले में कोई पुरुष हो तो उन्हें अपनी क्षमता का फर्क उन्नीस – बीस का नजर आता है। लेकिन अगर औरत खुद मुख्तार होकर सामने खड़ी हो जाए, वह भी निर्णय ले सकने वाली औरत तो चाहे बिन चाहे वह भावना से दब जाता है, और उसे अपनी तुलना में वह औरत बाइस लगने लगती है। ईर्ष्यावश शत्रुता का अंकुर मन में जन्म लेता है। कई प्रकार के संघर्षों द्वारा नारी अगर उस मुकाम तक पहुंच जाती है जहां पुरुष सिर्फ और सिर्फ अपना अधिकार जमाए बैठा है, फिर भी उसे कोई अहमियत नहीं दी जाती। ना सिर्फ पुरुषों द्वारा , बल्कि नारियों द्वारा भी। क्योंकि परंपरा और हमारी व्यवस्था में यही सिखलाया जाता है कि परिवार पति बच्चे ही नारी का पहला और अंतिम गंतव्य है।

The situation of women has definitely improved, but still cannot be called satisfactory. Outside, where women are not able to adjust to the woman as their boss, than to the 'man - boss', no matter how big a position the woman occupies in the outside world, but most men have the same woman at home. It is the mother of the wife and their children, as well as the need for fulfillment of other relations with the wife. Here, the motive of Ramanika Gupta is meaningful - if there are any men than men, then they see the difference of their capacity nineteen - twenty. But if the woman herself stands in front of the power of speech, she can also decide that the woman wants to be suppressed without any feeling, and she feels that woman in comparison to her. Jealousy enmity sprouts in the mind. Through many kinds of struggles, if the woman reaches the point where the man is seated only and only, he is not given any importance. Not only by men, but also by women. Because it is taught in the tradition and in our system that the family is the first and last destination of the woman.

मुख्य शब्द : मानसिकता, नैतिकता, यौन शुचिता, टीवी, अधिकार, सभ्यता, रूढ़िगत ,परिस्थिति, संघर्ष, सुशिक्षित।
Mentality, Morality, Sexual Purity, TV, Rights, Civilization, Stereotypes, Situation, Conflict, Well-Educated.

प्रस्तावना

21वीं सदी की भारतीय नारी अपनी अधिकांश वर्जनाओं को तोड़ कर, अबलापन की भावना पर हावी होकर विकास के सोपान पर आगे बढ़ रही है। वह यदि किरण बेदी है, तो कल्पना चावला भी है, और हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इसी क्रम में वह फूलन देवी भी है। जहां भी नारी का बोध डगमगाता है, वहीं उसका पतन भी चरम पर पहुंच जाता है । नारी की मानसिकता में शिक्षा और ज्ञान के द्वारा तीव्र परिवर्तन हुआ है । नैतिकता के मापदंड वर्तमान समय में बेहद लचर हो गए हैं, नैतिकता का भारतीय परंपरागत भाव नारी में तिरोहित होता जा रहा है। समय और जगह के अनुरूप मान्यताओं में शीर्षासन होता रहा है, लेकिन प्रदर्शन की होड़ में वर्तमान नारी स्वयं चीरहरण में रत है। सात्विक रुचि और कलात्मकता, उदारीकरण की बयार में बह गई है। संबंधों के बीज से प्रेम और स्नेह गायब हो रहे हैं। नारी भी आत्मकेंद्रित हो रही है। भजन

की स्वर लहरी पॉप और रीमिक्स संगीत में बदल रही है। साथ ही इसी के अनुरूप बदल रहा है आधुनिक नारी का मूल भाव।

"हमारे दौर का यह हादसा भी क्या कम है,
कि लोग जुगनू उठा लाए हैं हवन के लिए।"[1]

पश्चिमी सभ्यता के संक्रमण के कारण जहां नारी जीवन में विविध बदलाव आए हैं, वहीं यौन शुचिता भी संक्रमित हुई है। नग्नता को अपनाया जा रहा है यथार्थ के नाम पर। टीवी चौनलों पर प्रसारित और धारावाहिकों का सत्य धीरे–धीरे पूरे समाज का सत्य बनता जा रहा है। नारी के चित्रांकन में षड्यंत्रकारी भूमिका निभाने में टीवी सबसे आगे है। ऐसा नहीं है कि पर्दे पर नारी के सिर्फ नकारात्मक रूप को ही दिखलाया जाता है। फिर भी इसके माध्यम से क्राइम के नए–नए आयाम और संयंत्र के नए–नए तरीकों को समाज में स्थापित करने का यह प्रयास करता रहा है। निसंदेह आज नारी को समान अधिकार प्राप्त है, लेकिन आज भी वह दहेज के लिए ईंधन की तरह जलाई जाती है। पग–पग पर तिरस्कृत, बहिष्कृत होती रहती है। प्रख्यात साहित्यकार अमृता प्रीतम का कथन है

''मैं नहीं मानती कि यह सभ्यता का युग है ३ सभ्यता का युग तब आएगा जब औरत की मर्जी के बिना उसका नाम भी होठों पर नहीं आएगा। अभी तो बहुत सी आशिकी भी डंडे के जोर से बनती हैं।''[2]

विज्ञापन में नारी के शरीर का धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है, नारी का नंगापन उसकी स्वतंत्रता का सूचक नहीं है। इसके लिए सिर्फ विज्ञापित नारी ही अकेले उत्तरदाई नहीं है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो वर्तमान समय में भी समाज में नारी का स्थान कुछ वैसा ही महसूस होता है, जैसा किसी दुकान, मकान, आभूषण अथवा चल – अचल संपत्ति का होता है। आज के पुरुष प्रधान समाज को अपनी सामंती सोच, संकीर्ण मानसिकता, सड़ी – गली व्यवस्था, रूढ़िगत कुप्रथा को नारी उत्कर्ष के लिए त्यागना पड़ेगा। इस प्रकार का वातावरण पुरुष को तैयार करना होगा, जिससे नारी को एक जीवंत – मानुषी जन्मदात्री और राष्ट्र सृजनहार समझा जाए ना की भोग्य तुल्य ।

वर्तमान सामाजिक संदर्भ में नारी के आंतरिक द्वंद को निम्न पंक्ति में देखा जा सकता है –

राम भले ही पैदा हो या ना हो मेरी नगरों में,
लेकिन यहां रावण तब भी था और अब भी है।[3]

इतिहास से लेकर आज तक के संपूर्ण कालखंड को, नारी – संदर्भ में खंगाला जाए तो समय की सीप में जहां–जहां बहुमूल्य मोती मिलेंगे, वहीं पर समस्या, परिस्थिति और आधुनिकता के जाल में फंसी नारी की विभिन्न मुद्राओं और चीखों को भी देखा सुना जा सकता। नारी की परिस्थिति में इस ग्लोबलाइजेशन के दौर में भी उल्लेखनीय सुधार नहीं आया है, लेकिन फिर भी ग्लैमर, फैशन, आजादी और आसमान को छूने की चाह तो बढ़ी ही है। प्रत्येक वर्ष 14 फरवरी को मनाया जाने वाला वैलेंटाइन डे भी इसी परिवर्तन का प्रतीक है। टीवी चौनल वाले नारी स्वरूप में नमक – मिर्ची लगा कर बढ़ा – चढ़ा कर दिखा रहे हैं। ग्लोबलाइजेशन नारी के लिए एक चक्की की तरह बन गया है, जिसमें उन्हें पीसा जा रहा है । इसका एक चेहरा बेबस गरीब नारी का है जिसकी आंखों में उसके भूखे बच्चे की वेदना समाई हुई है, और दूसरा चेहरा उस लड़की का है जिसका मुंह गुस्से से तमतमाया हुआ है। भूमंडलीकरण के दौर में नारी की परिस्थिति में अपेक्षित सुधार आना संभव नहीं लगता। नारी के छद्म रूप को दिखाकर उन असंख्यक नारी की वेदना नहीं छिपाई जा सकती जो गांव, नगर, शहर या महानगर में रहती है। नारी का यथार्थ स्वरूप वही है जो रोटियों से लड़ती अभावों से जूझती दिखती है। जिसके लिए यह पंक्तियां सही लगती है–

लो क्षितिज हम नाप आये
कांपती वैशाखियों से
अब बचाना ही पड़ेगा
सूर्य को संपत्तियों से ।[4]

इसके बावजूद नारी अपने – आप को स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रही है। दया, ममता, वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, त्याग, बलिदान आदि के आधार पर ही सृष्टि खड़ी है । यह सारे गुण नारी में एक साथ समाहित हैं। नारी प्रेम और त्याग का प्रतिबिंब है नारी के अभाव में मानव जीवन शुष्क और समाज अपूर्ण है। सृष्टि की सर्वेसर्वा होने के बावजूद भी नारियों की हैसियत परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होती रही है। लेकिन आज की नारी पहले से ही अपने अस्मिता के प्रति सतर्क है। नारी आज दोहरी भूमिका निभा रही है गृहलक्ष्मी और राजलक्ष्मी के रूप में उसका गौरव महत्वपूर्ण है। शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता ने नारी जीवन में एक नई चेतना दी है। पुरुष संचालित समाज में आज नारी आत्मविश्वास से लबरेज है । यदि नारी में निर्भीकता और स्पष्टवादीता है तो फिर वह कहीं भी कुंठाग्रस्त नहीं होगी, पर्मुखादक्षिंता नहीं होगी।

नारी जागरण को वर्तमान समय में अत्यधिक गति मिल रही है। विशेषकर नगरों में सुशिक्षित नारी में यह अधिक दृष्टिगोचर होता है। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, व्यवसाई तथा कला एवं साहित्य में नारी सम्मानित हुई है। समाजवादी नारी भावना का लगातार विकास हो रहा है। वास्तव में भारत की पूरी मनःस्थिति 'स्त्रैण' है। इसी कारण हमारा देश कभी भी आक्रमक नहीं हो पाया। आधुनिक नारी अपने स्वाभिमान की रक्षा करना जानती है, और उसे अपनी सत्ता का भी पूर्ण भान है। नारी की शारीरिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना समग्र रूप में संपूर्ण संरचना का केंद्र बिंदु है। आज के सामाजिक संदर्भ में नारी, करवट बदलते परिवेश में पारिवारिक बिखराव, मूल्यहीनता, यौन संबंध का मांसल सतहीपन, दिशाहीन राजनीति का प्रभाव ,शोषण से मुक्ति पाने की छटपटाहट व्यक्त कर रही है ,और धीरे–धीरे निरंतर इस प्रयास में सफल भी हो रही है। नारी का अगला रूप वर्तमान समाज में बदल चुका है। नारी सफल हो ऊर्जावान बन रही है कुल मिलाकर यह स्थिति निश्चय ही सुखद है। वर्तमान समय में नारी की दशा और दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है, लेकिन पूरे प्रकरण में देश काल और परंपराओं को सम्मानजनक बनाए रखना भी अति

आवश्यक है । तभी नारी की सनातन गरिमा सुरक्षित रह सकती है। आज की नारी का संकल्प है –

मैं बेहिसाब निर्वात बाहें फैलाऊंगी।
मैं, भीड़ होकर नहीं
मनुष्य होकर
जीना चाहती हूं
खुली हवा में
एक–एक सांसे लेकर।[5]

प्रकृति का शाश्वत सत्य परिवर्तन है। इस सत्य का उद्घाटन समय–समय पर होता रहता है। समाज का एक अंग होने के कारण साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। हिंदी साहित्य ने अपने आविर्भाव से अद्यतन परिवर्तन के विभिन्न चरणों को बहुत नजदीक से देखा और महसूस किया है। आदि काल से लेकर आज तक चलती आ रही साहित्यिक परंपराओं में युगकारी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इससे संबंधित युग की प्रवृतियां – स्थितियां स्पष्ट रूप से साहित्य को प्रभावित करती है। प्रत्येक युग की प्रवृतियां भी तत्कालीन युग के परिवर्तन को इंगित करती है और स्वयं को युगीन बोधानुसार परिवर्तित भी करती है।

मनोरंजन, अय्यारी, जासूसी साहित्य – सर्जना से इतर मानवीय संवेदनाओं और क्रियाकलापों को केंद्र में रखकर पहले रचना की जा रही थी। वही तत्कालीन युग–बोध को दर्शाने के साथ–साथ नारी को भी रचना के केंद्र में रखा जाने लगा। नारी को प्यार की जागीर व भोग्या आदि स्थिति को त्याग कर साहित्यकार नारी– शिक्षा, नारी – उन्मूलन जैसे विषयों को सामने लाने लगे।

स्वतंत्रता आंदोलन में नारी की सशक्त भूमिका ने उसे भी एक नए पथ पर चलने के लिए अग्रसर किया। द्विवेदी युगीन राष्ट्रवादी कवियत्री राजरानी देवी जी के शब्दों में–

सोच लो संसार के कतार में,
बंद होकर यदि जिए तो क्या जिए?
कर्म के स्वच्छंद सुखमय क्षेत्र में
किंकिणी के साथ तलवार भी हो।[6]

नारी शक्ति लगातार साहित्य सृजन की ओर प्रवृत्त रही। यशोदा देवी, शारदा देवी जैसी लेखिकाओं ने नारी शक्ति को अस्तित्व का स्वर प्रदान किया । समय परिवर्तित होता रहा । समाजिक वर्जनाओं को तोड़ देने का आह्वान एवं बंधन से मुक्ति के प्रयास को मुखरता महादेवी वर्मा से मिली। छायावादी सात्विक नारी प्रेम की भावना से इतर नारी – स्वर को पोज देकर महादेवी वर्मा ने नारी विमर्श को केंद्र में रखा। प्रसाद की नारी की उज्जवल पावन छवि के साथ – साथ जो सामाजिक स्थिति बनी उस छवि की दीनता और सहायता की स्थिति को निराला ने तोड़ती पत्थर और विधवा जैसी रचनाओं से उजागर किया। पंत ने नारी को भोग का साधन या वासना की तृप्ति का साधन ना मानकर उसे एक मानवीय स्वरूप प्रदान किया।

लगातार होते परिवर्तनों ने नारी को स्वतंत्रता प्रदान की, जिसके फलस्वरूप नारी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ–साथ सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक ,सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्वतंत्रता भी मिली। नारी परंपराओं और मूल्यों के बंधन को तोड़ कर बोल्ड लेखन और बोल्ड चरित्र प्रदर्शित करने लगी। मानसिक शारीरिक एवं यौनिक स्वतंत्रता ने यद्यपि नारी की छवि को परंपरागत भारतीय छवि की नारी से अलग पहचान देने के साथ ही इस छवि को स्थापित भी किया। इसके बाद ही नारी अपनी बेलाग, बैलेंस, स्वच्छंद छवि और नवीन प्रवृत्तियों से प्रत्येक दिशा में उभरने लगी।

नया कालखंड नया युगबोध के साथ नारी चरित्र को लेकर स्थापित होती नयी पर परिवर्तनकारी अवस्थाओं ने नारी चेतना को स्वच्छंद यौनिक अवस्थाओं में परिवर्तित कर दिया। आज का समाज इतना परिवर्तित हो चुका है कि आज साहित्य के द्वारा नारी सोचती है कि पुरुष वेश्यालय कब खुलेंगे? आज नारी द्वारा एक साथ कई पुरुषों का शारीरिक शक्ति परीक्षण किया जाने लगा है। अपनी विशिष्ट दैहिक संरचना की इस स्वीकारोक्ति से अपने अंगों – उपायों के चित्र और उसकी सौंदर्यानुभूति को स्वयं प्रदर्शित करने लगी है। मांग की सिंदूर, सर के आंचल, पैरों के पायल – बिछुये, चूड़ी आदि का बहिष्कार सा कर स्वतंत्र नारी ने स्वतंत्र अस्तित्व की अवधारणाओं का निर्माण किया है। आज साहित्य सृजन करती नारी – पात्र स्वतंत्र – यौन संबंध बनाने में, सेक्स पार्टनर बदलने में, विवाहेतर या विवाह पूर्व शारीरिक संबंध बनाने में, बिनब्याही मां बनने में, अविवाहित जीवन व्यतीत करने में, किसी भी तरह का अपराध बोध नहीं स्वीकार करती है। नारी इसे स्वीकार भी क्यों करें ? आखिर साहित्य की परिवर्तित होती दिशाओं और दशाओं ने नारी को स्वतंत्र मानवीय पहचान प्रदान की है।

इस परिवर्तन परिवर्तित स्वरूप नारी की स्वतंत्र – स्वच्छंद मानसिक सोच पारंपरिक संरचना, सामाजिक सरोकारों का जीवन – मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, यह अलग से चिंतन का विषय है । परिवर्तन के नजरिए से नारी की परंपरागत छवि की विखंडित होती रूढ़ियाँ पुरुषजन्य विकृत सोच को परिवर्तित करती । साथ – ही – साथ या कहीं– ना – कहीं स्वस्थ एवं स्वतंत्र समाज का निर्माण भी करती है।

निष्कर्ष

पुरुष प्रधान समाज में नारी आज अपना वर्चस्व कायम करने के लिए निरंतर संघर्ष कर रही है। आज ऐसा कोई भी स्थान नहीं जहां नारी ने अपने आपको साबित नहीं किया हो, वह स्थान भी जहां कभी सिर्फ पुरुषों का बोलबाला रहता था नारी ने अपनी सफलता का परचम लहराया है। इस परचम को लहराने के लिए उन्हें काफी मशक्कत करनी पड़ी । लेकिन तमाम रुकावट ओं के बावजूद भी नारी ने अपनी उड़ान को रुकने नहीं दिया नारी के इसी संघर्ष की गाथा अकाल बयां करता है । मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि यह काल नारी की अवनति से उन्नति की ओर बढ़ते हुए उसके जीवन संघर्ष का काल है।

अध्ययन का उद्देश्य

समाज में नारी सुधार के कई प्रावधान उपलब्ध हैं। लेकिन उसकी व्यवहारिकता पर प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है। आधुनिक नारी की जिंदगी में कई कई भूमिकाएं जुड़

जाती है लेकिन अफसोस की बात है कि वर्षों बाद भी पुरुष के मन में नारी का पारंपरिक रूप ही विद्यमान है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *नारी विमर्श – दशा दिशा और समाज (लेख) डॉ0 उषा त्यागी*
2. *अमृता प्रीतम*
3. *नेट*
4. *डॉ0 उषा जैन (नेट)*
5. *राजरानी देवी (द्वेदी युग की कवियत्री)*
6. *हादसे– रमणिका गुप्ता, –15*
7. *उपनिवेश में स्त्री – प्रभा खेतान, –14*